भारत सरकार

परमाणु ऊर्जा विभाग

14.08.2014 को राज्य सभा में

पूछा जाने वाला अतारांकित प्रश्न संख्या : 3847

आन्ध्र प्रदेश में मोनाज़ाइट खनिज

3847. श्री देवेंदर गौड टी. :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में आन्ध्र प्रदेश में मोनाज़ाइट खनिज के सबसे बड़े भंडार हैं;

(ख) यदि हाँ, तो उक्त भंडारों से कितनी मात्रा में थोरियम निकाला जा सकता है;

(ग) इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड उक्त भंडारों में उक्त खनिज की खोज हेतु क्या-क्या प्रयास कर रहा है; और

(घ) वर्ष 2020 तक विभिन्न परियोजनाओं के लिए कितने थोरियम की आवश्यकता होगी?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधान मंत्री कार्यालय (डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

(क) जी, हाँ।

(ख) मई, 2014 की स्थिति के अनुसार, परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) के एक संघटक यूनिट परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय (एएमडी), ने, आंध्र प्रदेश के पुलिन बालुका खनिज (बीएसएम) निक्षेपों में 3.72 मिलियन मीटरी टन मोनाज़ाइट का पता लगाया है, जोकि भारत में पता लगाई गई अधिकतम मात्रा है। मोनाज़ाइट के उपर्युक्त स्त्रोतों (3.72 मिलियन मीटरी टन) में अनुमानत: लगभग 0.33 मिलियन मीटरी टन थोरियम ऑक्साइड (ThO_2) विद्यमान है, जोकि लगभग 0.29 मिलियन मीटरी टन थोरियम धातु के अनुरूप है।

(ग) इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड (आईआरईएल), जोकि, परमाणु ऊर्जा विभाग के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन, और भारत सरकार के 100% स्वामित्व वाला सरकारी क्षेत्र का एक उपक्रम है, पुलिन बालुका खनिजों के खनन और उनके पृथक्करण के काम में लगा हुआ है। इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड, अपने तमिलनाडु में मानवलाकुरिचि, केरल में चवारा और ओडिशा में ऑस्काम स्थित अपने संयंत्रों में मोनाज़ाइट का उत्पादन करता है।

इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड ने, प्रतिवर्ष 10,000 मीटरी टन मोनाज़ाइट का संसाधन करने के लिए ऑस्कॉम, ओडिशा में एक मोनाज़ाइट संसाधन संयंत्र की स्थापना की है। इस संयंत्र से मुख्य उत्पाद के रूप में विरल मृदा क्लोराइड और ट्राई-सोडियम फॉस्फेट प्राप्त होने के साथ-साथ, उपोत्पाद के रूप में थोरियम प्राप्त होता है।

इसके अतिरिक्त, इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड ने, पृथक्कृत उच्च शुद्धता वाली विरल मृदाओं के उत्पादन के लिए, मोनाज़ाइट संसाधन संयंत्र (एमओपीपी) से विरल मृदा क्लोराइड को संसाधित करने के लिए, विरल मृदा प्रभाग (आरईडी), अलुवा स्थित अपने यूनिट में संयंत्र सुविधाओं की भी स्थापना की है। संयंत्र को कमीशन कर दिया गया है।

(घ) 300 मेगावाट-ई क्षमता के भारतीय प्रगत भारी रिएक्टर के लिए थोरियम ऑक्साइड की वार्षिक आवश्यकता लगभग पाँच टन होगी, जिसमें प्रारंभिक क्रोड में एक समय की आवश्यकता साठ टन से कुछ कम होगी।

* * * * * * *